Namaze Janazaa Ka Tariqa (Hindi)

रिसाला नम्बर 28

नमाज़े जनाज़ा का त़रीक़ा (ह़-नफ़ी)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अत्त़ार क़ादिरी र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले जै़ल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाजे़ खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُسْتَطْرَف ج١ص٤٠ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नमाजे़ जनाज़ा का त़रीक़ा

येह रिसाला (**नमाजे़ जनाज़ा का त़रीक़ा**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

(ह-नफ़ी)

नमाज़े जनाज़ा का त़रीक़ा

शैत़ान लाख रोके येह रिसाला (23 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस के फ़वाइद ख़ुद ही देख लेंगे ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

रह़मते आ़-लमिय्यान, मह़बूबे रह़मान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-र-कत निशान है : जो मुझ पर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ता है **अल्लाह तआ़ला** उस के लिये **एक क़ीरात़** अज्र लिखता है और क़ीरात़ **उहुद पहाड़** जितना है । (مُصَنَّف عَبْد الرَّزَّاق ج ١ ص ٣٩ حديث ١٥٣)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

वली के जनाज़े में शिर्कत की ब-र-कत

एक शख़्स ह़ज़रते सय्यिदुना सरी स-क़त़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى के जनाज़े में शरीक हुवा । रात को ख़्वाब में ह़ज़रते सय्यिदुना सरी स-क़त़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى की ज़ियारत हुई तो पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكَ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़-मला फ़रमाया ? जवाब दिया : **अल्लाह**

عَزَّوَجَلَّ ने मेरी और मेरे जनाज़े में शरीक हो कर नमाज़े जनाज़ा पढ़ने वालों की **मग़्फ़िरत** फ़रमा दी। उस ने अ़र्ज़ की : या सय्यिदी मैं ने भी **आप** के जनाज़े में शरीक हो कर नमाज़े जनाज़ा पढ़ी थी। तो **आप** ने एक फ़ेहरिस निकाली मगर उस शख़्स का नाम शामिल न था, जब ग़ौर से देखा तो उस का नाम **ह़ाशिये** पर मौजूद था। **(تاریخ دمشق لابن عساکر ج۲۰ص۱۹۸)** **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ! صَلَّی اللہُ تعالٰی علٰی محمَّد

अ़क़ीदत मन्दों की भी मग़्फ़िरत

ह़ज़रते सय्यिदुना बिश्रे ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْكَافِى को इन्तिक़ाल के बा'द क़ासिम बिन मुनब्बेह عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الرَّافِع ने ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكَ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़-मला फ़रमाया ? जवाब दिया : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे बख़्श दिया और इर्शाद फ़रमाया : ऐ बिश्र ! तुम को बल्कि तुम्हारे **जनाज़े** में जो जो शरीक हुए उन को भी मैं ने **बख़्श** दिया। तो मैं ने अ़र्ज़ की : या रब عَزَّوَجَلَّ ! मुझ से मह़ब्बत करने वालों को भी बख़्श दे। तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की **रह़मत** मज़ीद जोश पर आई, और फ़रमाया : **क़ियामत तक जो तुम से मह़ब्बत करेंगे उन सब को भी मैं ने बख़्श दिया।** **(ایضاً ج۱۰ص۲۲۵)** **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

आ'माल न देखे येह देखा, है मेरे वली के दर का गदा
ख़ालिक़ ने मुझे यूं बख़्श दिया, سُبْحٰنَ اللّٰه سُبْحٰنَ اللّٰه

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह वालों رَحِمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى से निस्बत बाइ़से सआ़दत, इन का ज़िक्रे ख़ैर बाइ़से नुज़ूले रह़मत, इन की सोह़बत दो जहां के लिये बा ब-र-कत, इन के मज़ारात की ज़ियारत तिरयाक़े अमराज़े मा'सियत और इन की अ़क़ीदत ज़रीअ़ए नजाते आख़िरत है । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ हमें भी औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام से अ़क़ीदत और वलिय्ये कामिल ह़ज़रते सय्यिदुना बिश्रे ह़ाफ़ी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْكَافِى से मह़ब्बत है । **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! इन के सदक़े हमारी भी मग़्फ़िरत फ़रमा ।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

बिश्रे ह़ाफ़ी से हमें तो प्यार है
अपना बेड़ा पार है اِنْ شَآءَ اللّٰه

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

कफ़न चोर

एक औ़रत की नमाज़े जनाज़ा में एक **कफ़न चोर** भी शामिल हो गया और क़ब्रिस्तान साथ जा कर उस ने **क़ब्र** का पता मह़फ़ूज़ कर लिया । जब रात हुई तो उस ने कफ़न चुराने के लिये **क़ब्र** खोद डाली । यकायक मर्ह़ूमा बोल उठी : سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ एक **मग़्फ़ूर** (या'नी बख़्शिश का ह़क़दार) शख़्स **मग़्फ़ूर** (या'नी बख़्शी हुई) औ़रत का कफ़न चुराता है ! सुन, **अल्लाह** तआ़ला ने मेरी भी **मग़्फ़िरत** कर दी और उन तमाम लोगों की

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर दस मरतबा दुरूदे पाक पढ़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर सो रह़मतें नाज़िल फ़रमाता है। (طبرانی)

भी जिन्हों ने मेरे जनाज़े की **नमाज़** पढ़ी और तू भी उन में शरीक था। (येह सुन कर उस ने फ़ौरन **क़ब्र** पर मिट्टी डाल दी और **सच्चे दिल** से ताइब हो गया) **(شُعَبُ الْاِيمان ج٧ص٨رقم٩٢٦١)** **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।**

اٰمِين بِجاهِ النَّبِيِّ الْاَمين صَلَّى اللهُ تعالىٰ عليه واٰله وسلَّم

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تعالىٰ علىٰ محمَّد

तमाम शु-रकाए जनाज़ा की बख़्शिश

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! नेक बन्दों की नमाज़े जनाज़ा में ह़ाज़िरी किस क़दर सआदत मन्दी की बात है। जब भी मौक़अ़ मिले बल्कि मौक़अ़ निकाल कर मुसल्मानों के जनाज़ों में शिर्कत करते रहना चाहिये, हो सकता है किसी नेक बन्दे के जनाज़े में शुमूलिय्यत हमारे लिये **सामाने मग़्फ़िरत** बन जाए। ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ की **रह़मत** पर क़ुरबान कि जब वोह किसी मरने वाले की मग़्फ़िरत फ़रमा देता है तो उस के जनाज़े का साथ देने वालों को भी **बख़्श** देता है। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना, सुल्त़ाने बा क़रीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "बन्दए मोमिन को मरने के बा'द सब से पहली जज़ा येह दी जाएगी कि उस के तमाम **शु-रकाए जनाज़ा की बख़्शिश** कर दी जाएगी।" **(اَلتَّرغِيب وَالتَّرهِيب ج٤ص١٧٨حديث١٣)**

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

क़ब्र में पहला तोह़फ़ा

सरकारे नामदार, दो आलम के मालिको मुख़्तार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से किसी ने पूछा : मोमिन जब **क़ब्र** में दाख़िल होता है तो उस को सब से **पहला तोह़फ़ा** क्या दिया जाता है ? तो इर्शाद फ़रमाया : उस की **नमाज़े जनाज़ा पढ़ने वालों की मग़्फ़िरत** कर दी जाती है। **(شُعَبُ الْاِیمان ج۷ص۸رقم۹۲۵۷)**

जन्नती का जनाज़ा

मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आफ़िय्यत निशान है : जब कोई **जन्नती शख़्स** फ़ौत हो जाता है, तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ह़या फ़रमाता है कि उन लोगों को अ़ज़ाब दे जो उस का जनाज़ा ले कर चले और जो इस के पीछे चले और जिन्हों ने इस की नमाज़े जनाज़ा अदा की। **(اَلْفِردَوس بمأثور الْخِطاب ج۱ص۲۸۲حدیث۱۱۰۸)**

जनाज़े का साथ देने का सवाब

ह़ज़रते सय्यिदुना दावूद عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने बारगाहे ख़ुदा वन्दी عَزَّوَجَلَّ में अ़र्ज़ की : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! जिस ने मह़्ज़ तेरी रिज़ा के लिये **जनाज़े** का साथ दिया, उस की जज़ा क्या है ? **अल्लाह तआला** ने फ़रमाया : जिस दिन वोह **मरेगा** तो फ़िरिश्ते उस के जनाज़े के हमराह चलेंगे और मैं उस की **मग़्फ़िरत** करूंगा। **(شَرْحُ الصُّدُورص۹۷)**

उहुद पहाड़ जितना सवाब

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना, फ़ैज़ गन्जीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : जो शख़्स (ईमान का तक़ाज़ा समझ कर और हुसूले

सवाब की निय्यत से) अपने घर से जनाज़े के साथ चले, नमाज़े जनाज़ा पढ़े और दफ़्न होने तक जनाज़े के साथ रहे उस के लिये **दो क़ीरात़** सवाब है जिस में से **हर क़ीरात़** उहुद (पहाड़) के बराबर है और जो शख़्स सिर्फ़ जनाज़े की नमाज़ पढ़ कर वापस आ जाए तो उस के लिये **एक क़ीरात़** सवाब है।

(مُسلِم ص٤٧٢ حدیث٩٤٥)

नमाज़े जनाज़ा बाइ़से इ़ब्रत है

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू ज़र ग़िफ़ारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ का इर्शाद है : मुझ से सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, **रसूले मुह़तशम** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क़ब्रों की ज़ियारत करो ताकि आख़िरत की याद आए और मुर्दे को नहलाओ कि फ़ानी जिस्म (या'नी मुर्दा जिस्म) का छूना बहुत बड़ी नसीह़त है और **नमाज़े जनाज़ा** पढ़ो ताकि येह तुम्हें ग़मगीन करे क्यूं कि ग़मगीन इन्सान **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के साए में होता है और नेकी का काम करता है। **(اَلْمُستَدرَك لِلْحاكِم ج١ص٧١١ حدیث ١٤٣٥)**

मय्यित को नहलाने वग़ैरा की फ़ज़ीलत

मौलाए काएनात, ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से रिवायत है कि सुल्त़ाने दो जहान, शहन्शाहे कौनो मकान, रह़मते आ़-लमिय्यान صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि जो किसी मय्यित को **नहलाए**, कफ़न **पहनाए**, ख़ुश्बू **लगाए**, जनाज़ा **उठाए**, नमाज़ पढ़े और जो **नाक़िस बात** नज़र आए उसे **छुपाए** वोह अपने गुनाहों से ऐसा **पाक** हो जाता है जैसा जिस दिन **मां के पेट** से पैदा हुवा था।

(اِبنِ ماجه ج٢ص٢٠١ حدیث١٤٦٢)

जनाज़ा देख कर पढ़ने का विर्द

ह़ज़रते सय्यिदुना मालिक बिन अनस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को बा'दे वफ़ात किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰہُ بِکَ؟ या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या सुलूक फ़रमाया ? कहा : एक कलिमे की वजह से बख़्श दिया जो ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ जनाज़े को देख कर कहा करते थे। (वोह कलिमा येह है :) **سُبْحٰنَ الْحَیِّ الَّذِیْ لَا یَمُوْت** (या'नी वोह ज़ात पाक है जो ज़िन्दा है उसे कभी मौत नहीं आएगी) लिहाज़ा मैं भी **जनाज़ा** देख कर येही कहा करता था येह कलिमा कहने के सबब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने मुझे **बख़्श** दिया।

(اِحیاءُ الْعُلوم ج۵ص۲۶۶مُلَخَّصاً)

सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सब से पहला जनाज़ा किस का पढ़ा ?

नमाज़े जनाज़ा की इब्तिदा ह़ज़रते सय्यिदुना आदम **सफ़िय्युल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के दौर से हुई है, फ़िरिश्तों ने सय्यिदुना आदम **सफ़िय्युल्लाह** عَلٰى نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के जनाज़ए मुबा-रका पर चार तक्बीरें पढ़ी थीं। इस्लाम में वुजूबे नमाज़े जनाज़ा का हुक्म मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا में नाज़िल हुवा। ह़ज़रते सय्यिदुना **अस्अ़द बिन ज़ुरारह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का विसाले मुबारक हिजरत के बा'द नवें महीने के आख़िर में हुवा और येह पहले सह़ाबी की मय्यित थी जिस पर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने **नमाज़े जनाज़ा** पढ़ी।

(माख़ूज़ अज़ फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 5, स. 375, 376)

नमाज़े जनाज़ा फ़र्ज़े किफ़ाया है

नमाज़े जनाज़ा "फ़र्ज़े किफ़ाया" है या'नी कोई एक भी अदा कर ले तो सब बरिय्युज़्ज़िम्मा हो गए वरना जिन जिन को ख़बर पहुंची थी और नहीं आए वोह सब गुनहगार होंगे। इस के लिये जमाअ़त शर्त़ नहीं एक शख़्स भी पढ़ ले तो फ़र्ज़ अदा हो गया। इस की फ़र्ज़िय्यत का इन्कार **कुफ़्र** है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 825, عالمگیری ج۱ص۱۶۲، دُرِّمُختار ج۳ص۱۲۰)

नमाज़े जनाज़ा में दो रुक्न और तीन सुन्नतें हैं

दो रुक्न येह हैं : 《1》 चार बार "اَللّٰہُ اَکْبَر" कहना 《2》 क़ियाम। (دُرِّمُختار ج۳ص۱۲٤) इस में **तीन** सुन्नते मुअक्कदा येह हैं : 《1》 सना 《2》 दुरूद शरीफ़ 《3》 मय्यित के लिये दुआ़।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 829)

नमाज़े जनाज़ा का त़रीक़ा (ह़-नफ़ी)

मुक़्तदी इस त़रह़ निय्यत करे : "मैं निय्यत करता हूं इस जनाज़े की नमाज़ की वासित़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के, दुआ़ इस मय्यित के लिये, पीछे इस इमाम के" (فتاوٰی تاتارخانِیَہ ج۲ص۱۵۳) अब इमाम व मुक़्तदी पहले कानों तक हाथ उठाएं और "اَللّٰہُ اَکْبَر" कहते हुए फ़ौरन ह़स्बे मा'मूल नाफ़ के नीचे बांध लें और **सना** पढ़ें। इस में "وَتَعَالٰی جَدُّكَ" के बा'द "وَجَلَّ ثَنَاؤُكَ وَلَآ اِلٰهَ غَيْرُكَ" पढ़ें फिर बिग़ैर हाथ उठाए "اَللّٰہُ اَکْبَر" कहें, फिर **दुरूदे इब्राहीम** पढ़ें, फिर बिग़ैर हाथ उठाए "اَللّٰہُ اَکْبَر" कहें

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया । (طبرانی)

और दुआ़ पढ़ें (इमाम तक्बीरें बुलन्द आवाज़ से कहे और मुक़्तदी आहिस्ता । बाक़ी तमाम अज़्कार इमाम व मुक़्तदी सब आहिस्ता पढ़ें) दुआ़ के बा'द फिर "اَللّٰہُ اَکۡبَر" कहें और हाथ लटका दें फिर दोनों त़रफ़ सलाम फैर दें । सलाम में मय्यित और फ़िरिश्तों और ह़ाज़िरीने नमाज़ की निय्यत करे, उसी त़रह़ जैसे और नमाज़ों के सलाम में निय्यत की जाती है यहां इतनी बात ज़ियादा है कि मय्यित की भी निय्यत करे ।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 829, 835 माख़ूज़न)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बालिग़ मर्द व औ़रत के जनाज़े की दुआ़

اَللّٰھُمَّ اغْفِرْ لِحَیِّنَا وَمَیِّتِنَا وَشَاھِدِنَا وَغَآئِبِنَا وَصَغِیْرِنَا
इलाही ! बख़्श दे हमारे हर ज़िन्दा को और हमारे हर फ़ौत शुदा को और हमारे हर ह़ाज़िर को और हमारे हर ग़ाइब को और हमारे हर छोटे को
وَکَبِیْرِنَا وَذَکَرِنَا وَاُنْثَانَا ؕ اَللّٰھُمَّ مَنْ اَحْیَیْتَهٗ مِنَّا فَاَحْیِهٖ
और हमारे हर बड़े को और हमारे हर मर्द को और हमारी हर औ़रत को । इलाही ! तू हम में से जिस को ज़िन्दा रखे तो उस को इस्लाम पर
عَلَی الْاِسْلَامِ ؕ وَمَنْ تَوَفَّیْتَهٗ مِنَّا فَتَوَفَّهٗ عَلَی الْاِیْمَانِ ؕ
ज़िन्दा रख और हम में से जिस को मौत दे तो उस को ईमान पर मौत दे ।

(اَلْمُسْتَدرَک لِلْحاکِم ج ۱ ص ۶۸۴ حدیث ۱۳۶۶)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : मुझ पर दुरूदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का बाइस है। (ابویعلی)

ना बालिग़ लड़के की दुआ

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْهُ لَنَا اَجْرًا

इलाही ! इस (लड़के) को हमारे लिये आगे पहुंच कर सामान करने वाला बना दे और इस को हमारे लिये अज्र (का मूजिब)

وَّذُخْرًا وَّاجْعَلْهُ لَنَا شَافِعًا وَّمُشَفَّعًا ط

और वक़्त पर काम आने वाला बना दे और इस को हमारी सिफ़ारिश करने वाला बना दे और वोह जिस की सिफ़ारिश मन्ज़ूर हो जाए।

(کنزُالدّقائق ص٥٢)

ना बालिग़ा लड़की की दुआ

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا لَنَا فَرَطًا وَّاجْعَلْهَا لَنَا اَجْرًا

इलाही ! इस (लड़की) को हमारे लिये आगे पहुंच कर सामान करने वाली बना दे और इस को हमारे लिये अज्र (की मूजिब)

وَّذُخْرًا وَّاجْعَلْهَا لَنَا شَافِعَةً وَّمُشَفَّعَةً ط

और वक़्त पर काम आने वाली बना दे और इस को हमारे लिये सिफ़ारिश करने वाली बना दे और वोह जिस की सिफ़ारिश मन्ज़ूर हो जाए।

जूते पर खड़े हो कर जनाज़ा पढ़ना

जूता पहन कर अगर नमाज़े जनाज़ा पढ़ें तो जूते और ज़मीन दोनों का पाक होना ज़रूरी है और जूता उतार कर उस पर खड़े हो कर पढ़ें तो जूते के तले और ज़मीन का पाक होना ज़रूरी नहीं। **मेरे आक़ा** आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن एक सुवाल के जवाब में इर्शाद फ़रमाते हैं : "अगर वोह जगह पेशाब वग़ैरा से नापाक थी या जिन के जूतों के तले नापाक थे और इस ह़ालत में जूता पहने हुए नमाज़ पढ़ी उन की नमाज़ न हुई, एह़तियात़ येही है कि जूता उतार कर उस पर पाउं रख कर नमाज़ पढ़ी जाए कि ज़मीन या तला अगर नापाक हो तो नमाज़ में ख़लल न आए।"

(फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 9, स. 188)

ग़ाइबाना नमाज़े जनाज़ा नहीं हो सकती

मय्यित का सामने होना ज़रूरी है, **ग़ाइबाना नमाज़े जनाज़ा** नहीं हो सकती। **मुस्तह़ब** येह है कि इमाम मय्यित के सीने के सामने खड़ा हो। (دُرِّمُختار ج ۳ ص ۱۲۳، ۱۳٤)

चन्द जनाज़ों की इकट्ठी नमाज़ का त़रीक़ा

चन्द जनाज़े एक साथ भी पढ़े जा सकते हैं, इस में इख़्तियार है कि सब को आगे पीछे रखें या'नी सब का सीना इमाम के सामने हो या क़ित़ार बन्द। या'नी एक के पाउं की सीध में दूसरे का सिरहाना और

दूसरे के पाउं की सीध में तीसरे का सिरहाना وَعَلٰى هٰذَا الْقِيَاس (या'नी इसी पर क़ियास कीजिये) । (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 839, عالمگیری ج۱ص۱۶۵)

जनाज़े में कितनी सफ़ें हों ?

बेहतर येह है कि जनाज़े में तीन सफ़ें हों कि ह़दीसे पाक में है : **''जिस की नमाज़ (जनाज़ा) तीन सफ़ों ने पढ़ी उस की मग़्फ़िरत हो जाएगी ।''** अगर कुल सात ही आदमी हों तो एक इमाम बन जाए अब पहली सफ़ में तीन खड़े हो जाएं दूसरी में दो और तीसरी में एक । (غُنیہ ص۵۸۸) **जनाज़े में पिछली सफ़ तमाम सफ़ों से अफ़्ज़ल है ।** (دُرِّمُختار ج۳ص۱۳۱)

जनाज़े की पूरी जमाअ़त न मिले तो ?

मस्बूक़ (या'नी जिस की बा'ज़ तक्बीरें फ़ौत हो गईं वोह) अपनी बाक़ी तक्बीरें इमाम के सलाम फेरने के बा'द कहे और अगर येह अन्देशा हो कि दुआ़ वग़ैरा पढ़ेगा तो पूरी करने से क़ब्ल लोग जनाज़े को कन्धे तक उठा लेंगे तो सिर्फ़ तक्बीरें कह ले दुआ़ वग़ैरा छोड़ दे । चौथी तक्बीर के बा'द जो शख़्स आया तो जब तक इमाम ने सलाम नहीं फेरा शामिल हो जाए और इमाम के सलाम के बा'द तीन बार ''اَللّٰہُ اَکْبَر'' कहे । फिर सलाम फेर दे । (دُرِّمُختار ج۳ص۱۳۶)

पागल या ख़ुदकुशी वाले का जनाज़ा

जो पैदाइशी पागल हो या बालिग़ होने से पहले पागल हो गया

हो और इसी पागल पन में मौत वाक़ेअ़ हुई तो उस की नमाज़े जनाज़ा में ना बालिग़ की दुआ़ पढ़ेंगे। (جوھرہ ص۱۳۸،غُنیہ ص ۵۸۷) जिस ने ख़ुदकुशी की उस की नमाज़े जनाज़ा पढ़ी जाएगी। (دُرِّمُختار ج۳ص۱۲۷)

मुर्दा बच्चे के अह़काम

मुसल्मान का बच्चा ज़िन्दा पैदा हुवा या'नी अक्सर ह़िस्सा बाहर होने के वक़्त ज़िन्दा था फिर मर गया तो उस को ग़ुस्ल व कफ़न देंगे और उस की नमाज़ पढ़ेंगे, वरना उसे वैसे ही नहला कर एक कपड़े में लपेट कर दफ़्न कर देंगे। इस के लिये सुन्नत के मुत़ाबिक़ ग़ुस्ल व कफ़न नहीं है और नमाज़ भी इस की नहीं पढ़ी जाएगी। सर की त़रफ़ से अक्सर की मिक़्दार सर से ले कर सीने तक है। लिहाज़ा अगर इस का सर बाहर हुवा था और चीख़ता था मगर सीने तक निकलने से पहले ही फ़ौत हो गया तो उस की नमाज़ नहीं पढ़ेंगे। पाउं की जानिब से अक्सर की मिक़्दार कमर तक है। बच्चा ज़िन्दा पैदा हुवा या मुर्दा या कच्चा गिर गया उस का नाम रखा जाए और वोह क़ियामत के दिन उठाया जाएगा।

(دُرِّمُختار ورَدُّالمُحتار ج۳ص۱۵۲۔۱۵٤, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 841)

जनाज़े को कन्धा देने का सवाब

ह़दीसे पाक में है **:** "जो जनाज़े को चालीस क़दम ले कर चले उस के **चालीस कबीरा गुनाह** मिटा दिये जाएंगे।" नीज़ ह़दीस शरीफ़ में है **:** जो जनाज़े के चारों पायों को कन्धा दे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस की **ह़त्मी**

(या'नी मुस्तक़िल) मग़्फ़िरत फ़रमा देगा।

(اَلْجَوْهَرَةُ النَّيِّرَة ص۱۳۹، دُرِّمُختار ج۳ص۱۵۸-۱۵۹, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 823)

जनाज़े को कन्धा देने का त़रीक़ा

जनाज़े को कन्धा देना इबादत है। सुन्नत येह है कि यके बा'द दीगरे चारों पायों को कन्धा दे और हर बार दस दस क़दम चले। पूरी सुन्नत येह है कि पहले सीधे सिरहाने कन्धा दे फिर सीधी पाइंती (या'नी सीधे पाउं की त़रफ़) फिर उलटे सिरहाने फिर उलटी पाइंती और दस दस क़दम चले तो कुल चालीस क़दम हुए। (عالمگیری ج۱ص۱۶۲, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 822) बा'ज़ लोग जनाज़े के जुलूस में ए'लान करते रहते हैं, दो दो क़दम चलो ! उन को चाहिये कि इस त़रह़ ए'लान किया करें : **''दस दस क़दम चलो।''**

बच्चे का जनाज़ा उठाने का त़रीक़ा

छोटे बच्चे के जनाज़े को अगर एक शख़्स हाथ पर उठा कर ले चले तो ह़रज नहीं और यके बा'द दीगरे लोग हाथों हाथ लेते रहें। (عالمگیری ج۱ص۱۶۲) औ़रतों को (बच्चा हो या बड़ा किसी के भी) जनाज़े के साथ जाना **ना जाइज़** व मम्नूअ़ है।

(दुर्रे मुख़्तार ج۳ص۱۶۲, बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 823)

नमाज़े जनाज़ा के बा'द वापसी के मसाइल

जो शख़्स जनाज़े के साथ हो उसे बिग़ैर नमाज़ पढ़े वापस न होना

चाहिये और नमाज़ के बा'द औलियाए मय्यित (या'नी मरने वाले के सर परस्तों) से इजाज़त ले कर वापस हो सकता है और दफ़्न के बा'द इजाज़त की ह़ाजत नहीं। (عالمگیری ج۱ص١٦٥)

क्या शोहर बीवी के जनाज़े को कन्धा दे सकता है ?

शोहर अपनी बीवी के जनाज़े को कन्धा भी दे सकता है, **क़ब्र** में भी उतार सकता है और मुंह भी देख सकता है। सिर्फ़ ग़ुस्ल देने और बिला ह़ाइल बदन को छूने की मुमा-न-अ़त है। ओ़रत अपने शोहर को ग़ुस्ल दे सकती है। (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 812, 813)

मुरतद की नमाज़े जनाज़ा का हुक्मे शर-ई

मुरतद और काफ़िर के जनाज़े का एक ही हुक्म है। मज़हब तब्दील कर के ईसाई (क्रिस्चेन) होने वाले का जनाज़ा पढ़ने वाले के बारे में किये गए एक सुवाल का जवाब देते हुए सय्यिदी आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن **फ़तावा** र-ज़विय्या जिल्द 9 सफ़ह़ा 170 पर इर्शाद फ़रमाते हैं : अगर ब सुबूते शर-ई साबित हो कि मय्यित "عِیاذًا بِاللّٰہ" (या'नी ख़ुदा की पनाह) तब्दीले मज़हब कर के ईसाई (क्रिस्चेन) हो चुका था तो बेशक उस के जनाज़े की नमाज़ और मुसल्मानों की त़रह़ इस की तज्हीज़ो तक्फ़ीन सब **ह़रामे क़त़ई** थी। قَالَ اللّٰہُ تَعَالٰی (**अल्लाह तआ़ला** फ़रमाता है)

وَلَا تُصَلِّ عَلٰٓى اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ اَبَدًا وَّلَا تَقُمْ عَلٰى قَبْرِهٖ ؕ

(پ۱۰،التوبہ:۸٤)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और उन में से किसी की मय्यित पर कभी नमाज़ न पढ़ना और न उस की **क़ब्र** पर खड़े होना।

मगर नमाज़ पढ़ने वाले अगर उस की नसरानिय्यत (या'नी क्रिस्चेन होने) पर मुत्त़लअ़ न थे और बर बिनाए इ़ल्मे साबिक़ (या'नी पिछली मा'लूमात के सबब) उसे मुसल्मान समझते थे न उस की तज्हीज़ो तक्फ़ीन व नमाज़ तक उन के नज़्दीक उस शख़्स का नसरानी (या'नी क्रिस्चेन) हो जाना साबित हुवा, तो इन अफ़्आ़ल में वोह अब भी मा'ज़ूर व बे क़ुसूर हैं कि जब उन की दानिस्त (या'नी मा'लूमात) में वोह मुसल्मान था, उन पर येह अफ़्आ़ल बजा लाने ब ज़ो'मे ख़ुद शरअ़न लाज़िम थे, हां अगर येह भी उस की ईसाइय्यत से ख़बरदार थे फिर नमाज़ व तज्हीज़ो तक्फ़ीन के मुर-तकिब हुए क़त़्अ़न सख़्त गुनहगार और वबाले कबीरा में गिरिफ़्तार हुए, जब तक तौबा न करें नमाज़ उन के पीछे मक्रूह। मगर मुआ़-म-लए मुरतद्दीन फिर भी बरत्ना जाइज़ नहीं कि येह लोग भी इस गुनाह से काफ़िर न होंगे। हमारी शर-ए़ मुत़ह्हर सिराते मुस्तक़ीम है, इफ़्रात़ो तफ़्रीत़ (या'नी ह़द्दे ए'तिदाल से बढ़ाना घटाना) किसी बात में पसन्द नहीं फ़रमाती, अलबत्ता अगर साबित हो जाए कि उन्हों ने उसे नसरानी जान कर न सिर्फ़ ब वज्हे ह़माक़त व जहालत किसी

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تعالٰی علیہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस ने किताब में मुझ पर दुरूदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फ़िरिश्ते उस के लिये इस्तिग़्फ़ार (या'नी बख़्शिश की दुआ) करते रहेंगे। (طبرانی)

ग़-रज़े दुन्यवी की निय्यत से बल्कि ख़ुद इसे ब वज्हे नसरानिय्यत मुस्तह़िक़े ता'ज़ीम व क़ाबिले तज्हीज़ो तक्फ़ीन व नमाज़े जनाज़ा तसव्वुर किया तो बेशक जिस जिस का ऐसा ख़याल होगा वोह सब भी काफ़िर व मुरतद हैं और उन से वोही मुआ़-मला बरत्ना वाजिब जो मुरतद्दीन से बरता जाए। (फ़तावा र-ज़विय्या)

अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला पारह 10 **सू-रतुत्तौबह** की आयत नम्बर 84 में इर्शाद फ़रमाता है **:**

وَلَا تُصَلِّ عَلٰۤى اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ اَبَدًا وَّلَا تَقُمْ عَلٰى قَبْرِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَمَاتُوْا وَهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿۸۴﴾

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और उन में से किसी की मय्यित पर कभी नमाज़ न पढ़ना और न उस की क़ब्र पर खड़े होना बेशक वोह **अल्लाह** व रसूल से मुन्किर हुए और फ़िस्क़ (कुफ़्र) ही में मर गए।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِى इस आयत के तह़्त फ़रमाते हैं **:** इस आयत से साबित हुवा कि काफ़िर के जनाज़े की नमाज़ किसी ह़ाल में जाइज़ नहीं और काफ़िर की क़ब्र पर दफ़्न व ज़ियारत के लिये खड़े होना भी मम्नूअ़ है। (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 376)

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरूदे पाक पढ़े क़ियामत के दिन मैं उस से मुसा–फ़ह़ा करूं(या'नी हाथ मिलाऊं)गा । (ابن بشكوال)

रिवायत है कि सरदारे मक्कए मुकर्रमा, सरकारे **मदीनए मुनव्वरह** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : अगर वोह बीमार पड़ें तो पूछने न जाओ, मर जाएं तो जनाज़े में ह़ाज़िर न हो । (اِبنِ ماجه ج١ص٧٠حديث٩٢)

''मदीना'' के पांच ह़ुरूफ़ की निस्बत से जनाज़े के मु–तअ़ल्लिक़ पांच म–दनी फूल

''फ़ुलां मेरी नमाज़ पढ़ाए'' ऐसी वसिय्यत का ह़ुक्म

﴾1﴿ मय्यित ने वसिय्यत की थी कि मेरी नमाज़ फ़ुलां पढ़ाए या मुझे फ़ुलां शख़्स ग़ुस्ल दे तो येह वसिय्यत बाति़ल है या'नी इस वसिय्यत से (मरने वाले के) वली (या'नी सर परस्त) का ह़क़ जाता न रहेगा, हां वली को इख़्तियार है कि ख़ुद न पढ़ाए उस से पढ़वा दे । (बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 837, عالمگیری ج١ص١٦٣ وغیره) अगर किसी मुत्तक़ी बुज़ुर्ग या आ़लिम के बारे में वसिय्यत की हो तो वु–रसा को चाहिये कि इस पर अ़मल करें ।

इमाम मय्यित के सीने की सीध में खड़ा हो

﴾2﴿ **मुस्तह़ब** येह है कि मय्यित के सीने के सामने इमाम खड़ा हो और मय्यित से दूर न हो मय्यित ख़्वाह मर्द हो या औ़रत बालिग़ हो या ना बालिग़, येह उस वक़्त है कि एक ही मय्यित की नमाज़ पढ़ानी हो और अगर चन्द हों तो एक के सीने के मुक़ाबिल (या'नी सामने) और क़रीब खड़ा हो । (دُرِّمُختارو رَدُّالْمُحتارج٣ص١٣٤)

नमाज़े जनाज़ा पढ़े बिग़ैर दफ़्ना दिया तो ?

﴾3﴿ मय्यित को बिग़ैर नमाज़ पढ़े दफ़्न कर दिया और मिट्टी भी दे दी गई तो अब उस की **क़ब्र** पर नमाज़ पढ़ें जब तक फटने का गुमान न हो, और मिट्टी न दी गई हो तो निकालें और नमाज़ पढ़ कर दफ़्न करें, और **क़ब्र** पर नमाज़ पढ़ने में दिनों की कोई ता'दाद मुक़र्रर नहीं कि कितने दिन तक पढ़ी जाए कि येह मौसिम और ज़मीन और मय्यित के जिस्म व मरज़ के इख़्तिलाफ़ से मुख़्तलिफ़ है, गरमी में जल्द फटेगा और जाड़े (या'नी सर्दी) में ब-देर (या'नी देर में), तर (या'नी गीली) या शोर (या'नी खारी) ज़मीन में जल्द, ख़ुश्क और ग़ैरे शोर में ब-देर, फ़र्बा (या'नी मोटा) जिस्म जल्द, लाग़र (या'नी दुबला पतला) देर में। **(اَیضاً ص۱٤٦)**

मकान में दबे हुए की नमाज़े जनाज़ा

﴾4﴿ कूंएं में गिर कर मर गया या उस के ऊपर मकान गिर पड़ा और मुर्दा निकाला न जा सका तो उसी जगह उस की नमाज़ पढ़ें, और दरिया में डूब गया और निकाला न जा सका तो उस की नमाज़ नहीं हो सकती कि मय्यित का मुसल्ली (या'नी नमाज़ पढ़ने वाले) के आगे होना मा'लूम नहीं। **(رَدُّالْمُحتار ج۳ص۱٤۷)**

नमाज़े जनाज़ा में ता'दाद बढ़ाने के लिये ताख़ीर

﴾5﴿ **जुमुआ़** के दिन किसी का इन्तिक़ाल हुवा तो अगर **जुमुआ़** से पहले तज्हीज़ो तक्फ़ीन हो सके तो पहले ही कर लें, इस ख़याल से रोक रखना कि **जुमुआ़** के बा'द मज्मअ़ ज़ियादा होगा मक्रूह है।

(बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 840, رَدُّالْمُحتار ج۳ص۱۷۳ वग़ैरा)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

बालिग़ की नमाज़े जनाज़ा से क़ब्ल येह ए'लान कीजिये

मर्हूम के अ़ज़ीज़ व अह़बाब तवज्जोह फ़रमाएं ! मर्हूम ने अगर ज़िन्दगी में कभी आप की दिल आज़ारी या ह़क़ त-लफ़ी की हो या आप के मक़्रूज़ हों तो इन को रिज़ाए इलाही के लिये मुआ़फ़ कर दीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मर्हूम का भी भला होगा और आप को भी सवाब मिलेगा। नमाज़े जनाज़ा की निय्यत और इस का त़रीक़ा भी सुन लीजिये। **''मैं निय्यत करता हूं इस जनाज़े की नमाज़ की, वासित़े अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **के, दुआ़ इस मय्यित के लिये पीछे इस इमाम के।''** अगर येह अल्फ़ाज़ याद न रहें तो कोई ह़रज नहीं, आप के दिल में येह निय्यत होनी ज़रूरी है कि ''मैं इस मय्यित की नमाज़े जनाज़ा पढ़ रहा हूं'' जब इमाम साह़िब ''اَللّٰهُ اَكْبَر'' कहें तो कानों तक हाथ उठाने के बा'द ''اَللّٰهُ اَكْبَر'' कहते हुए फ़ौरन ह़स्बे मा'मूल नाफ़ के नीचे बांध लीजिये और **सना** पढ़िये। **दूसरी** बार इमाम साह़िब ''اَللّٰهُ اَكْبَر'' कहें तो आप बिग़ैर हाथ उठाए ''اَللّٰهُ اَكْبَر'' कहिये, फ़िर नमाज़ वाला **दुरूदे इब्राहीम** पढ़िये। **तीसरी** बार इमाम साह़िब ''اَللّٰهُ اَكْبَر'' कहें तो आप बिग़ैर

हाथ उठाए "اَللّٰهُ اَكْبَر" कहिये और बालिग़ के जनाज़े की दुआ पढ़िये[1] जब **चौथी** बार इमाम साहिब "اَللّٰهُ اَكْبَر" कहें तो आप "اَللّٰهُ اَكْبَر" कह कर दोनों हाथों को खोल कर लटका दीजिये और इमाम साहिब के साथ क़ाइदे के मुत़ाबिक़ सलाम फेर दीजिये।

ग़मे मदीना, बक़ीअ़,
मग़्फ़िरत और बे
हिसाब जन्नतुल
फ़िरदौस में आक़ा
के पड़ोस का त़ालिब

25 मुह़र्रमुल ह़राम 1435 सि.हि.
30-11-2013

एक चुप सो[100] सुख

सवाब कमाने का म-दनी मौक़अ़

जनाज़े के इन्तिज़ार में जहां लोग जम्अ़ हों वहां इस रिसाले से दर्स दे कर ख़ूब सवाब कमाइये। नीज़ अपने मर्ह़ूमीन के ईसाले सवाब के लिये ऐसे मौक़अ़ पर जनाज़े के जुलूस में या ता'ज़ियत के लिये जम्अ़ होने वालों में येह रिसाला तक़्सीम फ़रमाइये।

مدینہ

1 : अगर ना बालिग़ या ना बालिग़ा का जनाज़ा हो तो उस की दुआ पढ़ने का ए'लान कीजिये।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर एक बार दुरूद पढ़ता है **अल्लाह** उस के लिये एक क़ीरात़ अज्र लिखता है और क़ीरात़ उहुद पहाड़ जितना है। (عبدالرزاق)

ماٰخذ و مراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قراٰنِ مجید	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	شرح الصدور	مرکز اہلسنت برکات رضا الہند
خزائن العرفان	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	احیاء العلوم	دار صادر بیروت
صحیح مسلم	دار ابن حزم بیروت	جوہرہ	باب المدینہ کراچی
سنن ابن ماجہ	دار المعرفۃ بیروت	غنیہ	سہیل اکیڈمی مرکز الاولیاء لاہور
مصنف عبد الرزاق	دار الکتب العلمیۃ بیروت	فتاوٰی تاتارخانیہ	باب المدینہ کراچی
شعب الایمان	دار الکتب العلمیۃ بیروت	فتاوٰی عالمگیری	دار الفکر بیروت
تاریخ دمشق	دار الفکر بیروت	درمختار و ردالمحتار	دار المعرفۃ بیروت
مستدرک	دار المعرفۃ بیروت	کنز الدقائق	باب المدینہ کراچی
الترغیب والترہیب	دار الکتب العلمیۃ بیروت	فتاوٰی رضویہ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
الفردوس بمأثور الخطاب	دار الکتب العلمیۃ بیروت	بہارِ شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

नामे रिसाला : **नमाज़े जनाज़ा का त़रीक़ा**

पहली बार : जुमादिल अव्वल **1435** हि. मार्च **2014** ई.

ता'दाद : 20,000

नाशिर : **मक-त-बतुल मदीना**

म-दनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है।

किताब के ख़रीदार मु-तवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़्ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक-त-बतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

I.T. Majlis of Dawateislami

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : जब तुम रसूलों पर दुरूद पढ़ो तो मुझ पर भी पढ़ो, बेशक मैं तमाम जहानों के रब का रसूल हूं। (جمع الجوامع)

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़हा	उ़न्वान	सफ़हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	ग़ाइबाना नमाज़े जनाज़ा नहीं हो सकती	11
वली के जनाज़े में शिर्कत की ब-र-कत	1	चन्द जनाज़ों की इकठ्ठी नमाज़ का त़रीक़ा	11
अ़क़ीदत मन्दों की भी मग़्फ़िरत	2	जनाज़े में कितनी सफ़ें हों ?	12
कफ़न चोर	3	जनाज़े की पूरी जमाअ़त न मिले तो ?	12
तमाम शु-रकाए जनाज़ा की बख़्शिश	4	पागल या ख़ुदकुशी वाले का जनाज़ा	12
क़ब्र में पहला तोह़फ़ा	5	मुर्दा बच्चे के अह़काम	13
जन्नती का जनाज़ा	5	जनाज़े को कन्धा देने का सवाब	13
जनाज़े का साथ देने का सवाब	5	जनाज़े को कन्धा देने का त़रीक़ा	14
उ़हुद पहाड़ जितना सवाब	5	बच्चे का जनाज़ा उठाने का त़रीक़ा	14
नमाज़े जनाज़ा बाइ़से इ़ब्रत है	6	नमाज़े जनाज़ा के बा'द वापसी के मसाइल	14
मय्यित को नहलाने वग़ैरा की फ़ज़ीलत	6	क्या शोहर बीवी के जनाज़े को कन्धा दे सकता है?	15
जनाज़ा देख कर पढ़ने का विर्द	7	मुरतद की नमाज़े जनाज़ा का हुक्मे शर-ई	15
सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सब से पहला जनाज़ा किस का पढ़ा ?	7	जनाज़े के मु-तअ़ल्लिक़ पांच म-दनी फूल	18
		"फुलां मेरी नमाज़ पढ़ाए" ऐसी वसिय्यत का हुक्म	18
नमाज़े जनाज़ा फ़र्ज़ किफ़ाया है	8	इमाम मय्यित के सीने की सीध में खड़ा हो	18
नमाज़े जनाज़ा में दो रुक्न और तीन सुन्नतें हैं	8	नमाज़े जनाज़ा पढ़े बिग़ैर दफ़्ना दिया तो ?	19
नमाज़े जनाज़ा का त़रीक़ा (ह़-नफ़ी)	8	मकान में दबे हुए की नमाज़े जनाज़ा	19
बालिग़ मर्द व औ़रत के जनाज़े की दुआ़	9	नमाज़े जनाज़ा में ता'दाद बढ़ाने के लिये ताख़ीर	19
ना बालिग़ लड़के की दुआ़	10	बालिग़ की नमाज़े जनाज़ा से क़ब्ल येह ए'लान कीजिये	20
ना बालिग़ा लड़की की दुआ़	10		
जूते पर खड़े हो कर जनाज़ा पढ़ना	11	मआख़िज़ो मराजेअ़	22

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बालिग़ की नमाज़े जनाज़ा से क़ब्ल येह ए'लान कीजिये

मर्हूम के अज़ीज़ व अहबाब तवज्जोह फ़रमाएं ! मर्हूम ने अगर ज़िन्दगी में कभी आप की दिल आज़ारी या हक़ त-लफ़ी की हो या आप के मक़रूज़ हों तो इन को रिज़ाए इलाही के लिये मुआफ़ कर दीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ मर्हूम का भी भला होगा और आप को भी सवाब मिलेगा । नमाज़े जनाज़ा की निय्यत और इस का त़रीक़ा भी सुन लीजिये । **''मैं निय्यत करता हूं इस जनाज़े की नमाज़ की, वासित़े अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के, दुआ इस मय्यित के लिये पीछे इस इमाम के ।''** अगर येह अल्फ़ाज़ याद न रहें तो कोई ह़रज नहीं, आप के दिल में येह निय्यत होनी ज़रूरी है कि ''मैं इस मय्यित की नमाज़े जनाज़ा पढ़ रहा हूं'' जब इमाम साह़िब ''اَللّٰهُ اَكْبَر'' कहें तो कानों तक हाथ उठाने के बा'द ''اَللّٰهُ اَكْبَر'' कहते हुए फ़ौरन हस्बे मा'मूल नाफ़ के नीचे बांध लीजिये और **सना** पढ़िये । **दूसरी** बार इमाम साह़िब ''اَللّٰهُ اَكْبَر'' कहें तो आप बिग़ैर हाथ उठाए ''اَللّٰهُ اَكْبَر'' कहिये, फिर नमाज़ वाला **दुरूदे इब्राहीम** पढ़िये । **तीसरी** बार इमाम साह़िब ''اَللّٰهُ اَكْبَر'' कहें तो आप बिग़ैर हाथ उठाए ''اَللّٰهُ اَكْبَر'' कहिये और बालिग़ के जनाज़े की दुआ पढ़िये[1] जब **चौथी** बार इमाम साह़िब ''اَللّٰهُ اَكْبَر'' कहें तो आप ''اَللّٰهُ اَكْبَر'' कह कर दोनों हाथों को खोल कर लटका दीजिये और इमाम साह़िब के साथ क़ाइदे के मुत़ाबिक़ सलाम फेर दीजिये ।

---

1 : अगर ना बालिग़ या ना बालिग़ा का जनाज़ा हो तो उस की दुआ पढ़ने का ए'लान कीजिये ।

मक-त-बतुल मदीना®

दा'वते इस्लामी

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया

Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net